भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परंपरा

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,

अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2023

ISBN : **978 - 81 - 89435 - 69 - 1**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

20

महात्मा गांधी का सत्याग्रह दर्शन

कजोड़मल रैगर
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह दरअसल अहिंसक क्रान्ति का वह विशिष्ट रूप है, जिसमें सत्य को ही सर्वोच्च मूल्य मानकर उसके लिए दृढ़ता और धैर्य के साथ संघर्ष किया जाता है। गांधी जी ने इस शब्द का प्रथम प्रयोग 1906 में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर थोपी गई अन्यायपूर्ण नीतियों के विरोध में किया। यह मात्र राजनीतिक तकनीक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक-नैतिक शक्ति पर आधारित जीवनमूल्य है।

सत्याग्रह का मूल भाव है— सत्य पर अडिग रहना, और इस अडिगता की प्राण-शक्ति है अहिंसा। अहिंसा यहाँ नकारात्मक निष्क्रियता नहीं, बल्कि सकारात्मक, सजग और जागरूक नैतिक सक्रियता है, जिसमें अन्याय के विरोध हेतु स्वेच्छा से कष्ट सहने की क्षमता शामिल है। गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ आत्मशक्ति, प्रेमशक्ति और सत्यशक्ति का संगठित रूप है, जो हिंसा का प्रतिकार हिंसा से नहीं बल्कि नैतिक बल से करता है।

सत्याग्रह असहयोग, बहिष्कार और सविनय अवज्ञा जैसी विधियों के माध्यम से अन्यायपूर्ण व्यवस्था को भीतर से निर्बल करता है और व्यक्ति तथा समाज—दोनों को उज्जवल आत्मबल प्रदान करता है। बिना अहिंसा के सत्याग्रह मात्र दुराग्रह बन जाता है, जिसमें सत्य का प्रकाश नहीं होता।

इस प्रकार, गांधी का सत्याग्रह-दर्शन समाज परिवर्तन की वह राह है जिसमें नैतिकता, आत्मानुशासन, सत्य, प्रेम, त्याग और कष्ट-वरण—ये सभी तत्व मिलकर एक अहिंसक क्रान्ति का निर्माण करते हैं। यह क्रान्ति बाह्य सत्ता को चुनौती देने से अधिक मानव-मन में परिवर्तन और अन्याय के नैतिक निराकरण का मार्ग प्रशस्त करती है।

गांधी जी ने सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध से पूर्णत: भिन्न ठहराया। निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बलों की विधि है जिसमें हिंसा की गुंजाइश रहती है; जबकि सत्याग्रह

सबलतम का शस्त्र है—पूरी तरह सत्य और अहिंसा पर आधारित। इसका अर्थ है सत्य पर दृढ़ रहना और विरोधी को कष्ट देने के बजाय स्वयं कष्ट-वरण करके सत्य को विजयी बनाना।

गांधी जी के अनुसार विरोधी को दंड या हिंसा से नहीं, बल्कि धैर्य, सहानुभूति और आत्मिक प्रेमशक्ति से जीता जा सकता है, क्योंकि एक को जो सत्य दिखता है वह दूसरे को भ्रम प्रतीत हो सकता है। अतः सत्याग्रह आत्मशक्ति, प्रेमशक्ति और ईश्वर-निष्ठा का मेल है।

उनका विश्वास था कि सत्याग्रह संस्था या बाहरी शक्ति पर नहीं, बल्कि ईश्वर पर आस्था और अपने अंदर के चैतन्य पर निर्भर है। जब सत्याग्रही स्वयं को असहाय अनुभव करता है, तब ईश्वर उसकी सहायता करता है।

इस प्रकार, सत्याग्रह का प्रयोग व्यक्ति से लेकर राजनीति तक हर क्षेत्र में संभव है, क्योंकि शासन तभी चलता है जब जनता उसे स्वीकार करे। सत्याग्रह इस नैतिक शक्ति को जाग्रत करता है और अन्याय के विरुद्ध अहिंसक, सत्यनिष्ठ और अजेय संघर्ष का मार्ग बन जाता है।

गांधी जी सत्याग्रह को ऐसी नैतिक शक्ति मानते हैं जो तानाशाही, सैन्यवाद और शक्ति-प्रधान राजनीति को जड़ से नष्ट कर सकती है। उनके अनुसार सत्य और अहिंसा के दृढ़ पालन से पूरे विश्व को प्रभावित किया जा सकता है, क्योंकि सत्याग्रह राजनीति में सत्य, नैतिकता और आत्मबल के प्रवेश का ही दूसरा नाम है।

क्रियाविधि के संदर्भ में गांधी जी मानते हैं कि अहिंसा भी संक्रामक है—जितना इसे व्यक्ति अपने भीतर विकसित करता है, उतना ही इसका प्रभाव समाज में फैलता है। जब उत्पीड़ित प्रतिरोध नहीं करता, अत्याचारी की हिंसा का आनंद समाप्त हो जाता है और उसके हथियार की धार स्वतः कुंद पड़ जाती है। सत्याग्रही अपने शांत, आत्मिक प्रतिरोध से हिंसा को निष्प्रभावी कर देता है।

उनके अनुसार हिंसा पूरी तरह दृश्य है, पर सक्रिय अहिंसा का अदृश्य बल अधिक प्रबल होता है। जब अहिंसा क्रियाशील होती है, तो वह अप्रत्याशित शक्ति और चमत्कारिक परिणाम उत्पन्न कर सकती है।

सत्याग्रह की अन्य प्रशाखाएँ :— डॉ. के.एल. श्रीधरानी ने सत्याग्रह की अनेक शाखाओं का सुव्यवस्थित वर्गीकरण किया है। गांधी जी के नेतृत्व में समय-समय पर इन विभिन्न रूपों का प्रयोग किया गया। इन शाखाओं में समझौता-वार्ता, पंचायत, आन्दोलन, प्रदर्शन, अल्टीमेटम, आत्म-शुद्धीकरण, हड़ताल, सार्वजनिक हड़ताल, पिकेटिंग, धरना, आर्थिक बहिष्कार, लगान-बन्दी, हिजरत, सहयोग-विसर्जन,

सामाजिक बहिष्कार, सविनय अवज्ञा, दृढ़-निश्चयी सत्याग्रह तथा समानान्तर सरकार शामिल हैं।

इनमें से अनेक विधियाँ विशेष परिस्थितियों में ही प्रयुक्त हुईं, इसलिए उनका महत्व स्थानीय या कालानुसार सीमित माना जाता है। परन्तु सत्याग्रह की वे विधियाँ जो सार्वभौमिक उपयोगिता और नैतिक स्थायित्व रखती हैं—जैसे सविनय अवज्ञा, असहयोग, आत्मशुद्धि, बहिष्कार—वे सत्याग्रह के मूल स्वरूप को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं और उन्हीं पर अधिक विचार आवश्यक है।

उपवास :— सत्याग्रह के साधनों में उपवास को गांधी जी ने अंतिम और अत्यंत गंभीर शस्त्र माना है। यह केवल बाहरी दबाव का साधन नहीं, बल्कि *शुद्ध, प्रेमपूर्ण और आत्मिक प्रार्थना* की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। गांधी जी स्वयं अनेक अवसरों पर उपवास करते थे, पर वे इसे तभी उचित मानते थे जब सत्याग्रही पूर्ण आन्तरिक शुद्धता, निस्वार्थता और अहिंसक भावना से प्रेरित हो।

उपवास का उद्देश्य आत्म-शुद्धि, लोकमत को जाग्रत करना और नैतिक चेतना जगाना है, लेकिन इसका प्रयोग बेहद सावधानी से होना चाहिए, क्योंकि यह कभी-कभी दबाव या नैतिक बल-प्रयोग का रूप भी ले सकता है। इसी कारण इसे खतरनाक शस्त्र भी माना गया है—क्योंकि कोई व्यक्ति प्राण-त्याग की धमकी देकर जनता या विरोधी पर अपनी इच्छा थोप सकता है।

गांधी जी स्वीकार करते हैं कि उपवास सत्याग्रही के शस्त्रागार में 'अव्यर्थ शस्त्र' है, पर साथ ही वे यह सामान्य सिद्धांत भी बताते हैं कि सभी अन्य न्यायोचित उपाय विफल हो जाने पर ही सत्याग्रही उपवास का सहारा ले सकता है। इसके लिए अत्यंत आन्तरिक शक्ति, निस्वार्थता, अहंकार-हीनता और सफलता की अनासक्ति आवश्यक है। जिसके भीतर यह शक्ति न हो, उसे उपवास का नाम भी नहीं लेना चाहिए।

अहिंसक क्रान्ति की अवधारणा को समझने के लिए केवल सिद्धान्तों की चर्चा पर्याप्त नहीं होती। क्रान्ति का वास्तविक अर्थ सामाजिक संरचना में परिवर्तन, जीवन-व्यवहार में रूपान्तरण तथा मनुष्य की चेतना में ऐसी जागृति लाना है जो अन्याय, अन्यायपूर्ण सत्ता, और सामाजिक विषमता को मूल से चुनौती दे सके। यदि अहिंसक क्रान्ति केवल विचारों तक सीमित रह जाए और जीवन के व्यावहारिक धरातल पर कोई बदलाव न ला सके, तो उसका क्रान्ति कहलाना कठिन हो जाता है। इसलिए उसके लिए आवश्यक है कि वह समाज के सम्बन्धों, शक्ति-संतुलन और मनोवृत्तियों में वास्तविक रूप में हस्तक्षेप करे।

गांधीजी के संदर्भ में यह बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने अहिंसक क्रान्ति को केवल एक राजनीतिक उपकरण की तरह नहीं देखा था। वे इसे एक व्यापक सामाजिक प्रयोग, एक नैतिक अनुशासन और एक आध्यात्मिक आन्दोलन के रूप में देखते थे। हमने पहले कहा भी है कि गांधीजी ने अहिंसा को स्वतंत्रता-संग्राम में एक साधन के रूप में अपनाया, किन्तु उनका दृष्टिकोण इससे कहीं व्यापक था। उनके लिए अहिंसा का अर्थ केवल हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि सत्य, आत्मबल, आत्मनियंत्रण और नैतिक साहस का संगठित रूप था। यही कारण है कि वे स्वयं कहते थे कि सत्याग्रह की कोई निश्चित पाठ्य-पुस्तक नहीं है। यह कोई ऐसा शास्त्र नहीं है, जिसका अंतिम और अटल स्वरूप पहले से निर्धारित हो। यह एक जीवित प्रक्रिया है, एक निरंतर विकसित होने वाला प्रयोग है।

गांधीजी के मन में अपने सिद्धान्तों को लेकर जितनी गहन श्रद्धा थी, उतनी ही विनम्रता भी थी। वे मानते थे कि सत्य की ओर उनका उत्थान प्रतिदिन नया होता है। वे स्वयं अपने ज्ञान को सीमित बताते हैं और कहते हैं कि सत्याग्रह का विज्ञान अभी रचा जा रहा है। वह आज जो समझते हैं, कल उसे और बेहतर समझ सकते हैं। इस विनम्रता के कारण ही वे अपने अनुयायियों को लगातार चेताते रहे कि उनके कथन को अंतिम सत्य न माना जाए। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उनका विज्ञान भविष्य में मूर्ख भी सिद्ध हो सकता है, और संभव है कि सत्याग्रह का जो स्वरूप उन्हें आज उपयुक्त प्रतीत होता है, वह विश्व की युद्ध-संकट जैसी समस्याओं के समाधान में कोई मूल्य न रखे। ऐसी स्पष्ट और साहसी स्वीकृति किसी सत्यनिष्ठ और स्वतंत्र चिन्तक का ही संकेत है।

उनके विचारों का यह पक्ष—जहाँ वे अपनी सीमाओं को स्वीकारते हैं—अहिंसक क्रान्ति की व्यावहारिक दिशा का मूल है। वे केवल एक कठोर सिद्धान्तवादी नहीं थे, बल्कि प्रयोगधर्मी थे। वे मानते थे कि अहिंसा केवल बाहरी व्यवहार का नियम नहीं, बल्कि भीतर के गहन परिवर्तन का नाम है। यदि मनुष्य के अन्तर्मन में सत्य और प्रेम जाग्रत नहीं होते, तो बाहरी अहिंसा केवल दिखावा रह जाती है। इसी कारण उन्होंने कहा कि कभी-कभी जो अहिंसा की विजय प्रतीत होती है, वह वास्तव में हिंसा के भय की विजय भी हो सकती है। अत: किसी भी अहिंसक संघर्ष का परिणाम तभी सच्ची विजय कहलाएगा, जब उसमें सत्य की आभा और नैतिक बल का प्रवाह हो।

गांधीजी के लिए यह सम्पूर्ण प्रक्रिया ईश्वर-निर्भरता की उपज थी। वे मानते थे कि जो कुछ वे राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं, वह उनके निजी अहंकार या बौद्धिक प्रयास का परिणाम नहीं, बल्कि प्रार्थना और ईश्वर-चिन्तन का उत्तर है।

सत्याग्रह की आत्मा ईश्वर पर निर्भरता है—यह निर्भरता हार मानने वाली कमजोरी नहीं, बल्कि उच्चतम नैतिक शक्ति का आधार है। जब मनुष्य ईश्वर के प्रति समर्पित होता है, तभी उसके अंदर से वह भय, क्रोध और हिंसात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त होकर सत्य के लिए अडिग खड़ा हो सकता है।

अहिंसक क्रान्ति का व्यावहारिक रूप इसी प्रकार समाज में विकसित होता है—जहाँ व्यक्ति का आचरण, उसका मन, उसकी चेतना और उसकी सामाजिक भूमिका सब मिलकर सत्य और नैतिकता के लिए सक्रिय होते हैं। यह क्रान्ति बाहरी हथियारों से नहीं, बल्कि व्यक्ति के अन्तर्मन की दृढ़ता से संचालित होती है। गांधीजी की दृष्टि में यह क्रान्ति स्थिर नहीं, बल्कि सतत बहती हुई धारा है, जो परिस्थितियों के अनुसार अपना रूप बदल सकती है, किंतु जिसके मूल में सत्य का अटल आलोक सदा विद्यमान रहता है।

इसीलिए गांधीजी की अहिंसक क्रान्ति का वास्तविक व्यावहारिक रूप कोई एक सूत्र में बँधकर नहीं देखा जा सकता। यह एक जीवित परम्परा है—समाज, मनुष्य और समय के साथ विकसित होने वाली, मनुष्य को भीतर से बदलने वाली, और परिवर्तन की इस प्रक्रिया में उसे सत्य के और निकट ले जाने वाली। यही इस क्रान्ति का सार है और यही उसका वास्तविक जीवन-रूप।

सारतः गांधीजी का सम्पूर्ण सत्याग्रह-दर्शन इस मूल भावना पर आधारित है कि सत्य और अहिंसा मानव-जीवन की सर्वोच्च नियामक शक्तियाँ हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि सत्याग्रह दुर्बलता का हथियार नहीं, बल्कि आत्मबल, प्रेम और नैतिक साहस की परम अभिव्यक्ति है, जो विरोधी को हिंसा से नहीं, बल्कि धैर्य, करुणा और आत्मकष्ट से सत्य की ओर ले जाती है।

सत्याग्रह की उपयोगिता उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय जीवन में व्यापक मानी—यह तानाशाही, अन्याय और दमन को तोड़ने वाला नैतिक प्रतिरोध है। इसके विविध रूप—असहयोग, सविनय अवज्ञा, बहिष्कार, हड़ताल, पिकेटिंग, और अंततः उपवास—सभी का लक्ष्य जनचेतना को जगाकर अन्यायी के हृदय को परिवर्तित करना है, न कि उसे पराजित करना। परंतु उपवास जैसे शस्त्रों को उन्होंने अंतिम उपाय माना, क्योंकि उनका गलत उपयोग नैतिक दबाव में बदल सकता है।

गांधीजी ने अहिंसक क्रान्ति को केवल विचार नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन लाने वाली व्यावहारिक प्रक्रिया माना। उनके लिए क्रान्ति का अर्थ सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर नैतिक चेतना का उदय था। उन्होंने अपने सिद्धान्तों को अंतिम सत्य न मानकर निरंतर संशोधन के लिए खुला रखा। वे स्वयं कहते थे

कि सत्याग्रह अभी भी विकसित हो रहा विज्ञान है, और इसका मूल्य तभी है जब यह अहंकार नहीं, ईश्वर-निर्भरता और सत्यनिष्ठा पर आधारित हो।

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि गांधी का सत्याग्रह और अहिंसक क्रान्ति मानवता को नैतिक ऊँचाई पर ले जाने की प्रक्रिया है—जहाँ व्यक्ति आत्मबल से अन्याय का सामना करता है, समाज नैतिक विवेक से परिवर्तित होता है, और राजनीति शक्ति नहीं, सत्य को आधार बनाती है। यह बाहरी संघर्ष नहीं, बल्कि आंतरिक जागरण पर आधारित एक शाश्वत, सार्वभौमिक और सतत विकसित होती मानवीय क्रान्ति है।

✣✣✣